पत्रक : AH/01/17 वर्ष : 2023 KVK, Godda

भाकृअनुप
ICAR

Striving for improved & sustainable livelihood

जी0 बी0 टी0- कृषि विज्ञान केन्द्र

चकेश्वरी फार्म, गोड्डा (झारखण्ड)- 814133
मो0- 9060264181
डा0 सतीश कुमार (विषय वस्तु विशेषज्ञ- पशुपालन)
डा0 रवि शंकर (वरीय वैज्ञानिक एवं प्रमुख)

मुर्गी पालन

ग्रामीण स्वरोजगार का साधन

आज हमारे देश में मुर्गी पालन का धंधा लोक-प्रिय हो गया है। क्या गॉव क्या शहर हर जगह लोगों ने मुर्गी-पालन का धंधा अपनाना शुरू कर दिया है। हम सभी इस बात को जानते हैं कि आहार को संतुलित बनाने के लिये पशुधन से प्राप्त हाने वाले प्रोटीन जैसे-दूध, मांस और अण्डे का उपयोग आवश्यक है। मुर्गीपालन का व्यवसाय कम जमीन थोड़ी पूंजी और थोड़ी मेहनत से ही शुरू किया जा सकता है। खेती के काम के बाद बचे समय में मुर्गीपालन किया जा सकता है। घर की औरतें और बच्चे भी अपने फालतू समय में इस धंधे की आराम से कर सकते हैं। घरों में अगर मुर्गियॉं पाली जायें तो उसके रख-रखाव तथा खुराक पर अधिक खर्च नहीं पड़ता चूंकि घर का बचा-खुचा भोजन सब्जी के बेकार पत्ते और अनाज के बचावन से उसके लिये अच्छा भोजन प्राप्त हो सकता हैं तथा उसके बदले हमें ताजे और बलदायक अण्डे मिलते हैं। जो हमारे स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक लाभप्रद है। जो लोग शाकाहारी है वे भी उन अण्डों को जो बिना मुर्गे से प्राप्त होते हैं खा सकते हैं इस तरह लोग अपने फालतू समय से मुर्गियों पालकर और उसके अण्डे तथा मांस बेचकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं।

यह क्षेत्र मौसम तथा व्यवसायिक दृष्टि से इस धंधे के लिए अनुकूल है। अतः यहाँ के किसान भाइयों को अधिक से अधिक संख्या में इस लाभदायक धंधे को अपनाना चाहिये।

मुर्गियों की प्रमुख नस्लें–

उपयोगिता के ख्याल से मुर्गियाँ तीन प्रकार मानी जाती है। एक प्रकार की मुर्गियाँ सिर्फ मांस की पैदावार के लिए उपयोगी होती है तो दूसरे प्रकार की मुर्गियाँ ज्यादा अण्डे देती है। तीसरे प्रकार की मुर्गियाँ दोनों प्रकार से उपयोगी होती है। यानि उसके मांस और अण्डा दोनों की प्राप्ति होती है। कुछ लोग मनोरंजन के ख्याल से भी मुर्गी पालन करते हैं। इसके अतिरिक्त आजकल गहन शोध के फलस्वरूप संकर किस्म की मुर्गियों उत्पन्न की गई है जिनकों विभिन्न व्यवसायिक नामों से बेचा जाता है। ये नाम है हाई–लाइन, रानीशोभर, बैदकोक, हवाई, दिव्यायन रेड इत्यादि। प्रत्येक मे अंडो देने वाली (लेयरस्ट्रेन) तथा मांस उत्पन्न करने वाली (बोआयलर स्ट्रेन) किस्में होती है। इसकी उत्पादन क्षमता शुद्ध नस्लों की अपेक्षा अधिक होती है। इसकी साल में अंडा उत्पादन क्षमता 260 से 280 अंडे होती है। इसका शारीरिक वजन साढे पॉच सप्ताह की उम्र में एक किलों हो जाता है तथा आठ सप्ताह में दो किलो से भी अधिक हो जाता है। पर एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि चूंकि ये सभी व्यवसायिक नस्लें संकर (क्रौस–बेड) किस्म की मुर्गियाँ हैं। अतः इसकी अधिक उत्पादन क्षमता केवल एक पीढी तक ही सीमित रहती है। इससे उत्पन्न बच्चों का उत्पादन बहुत ही घट जाता है। इसलिए प्रत्येक बार एक दिन के बच्चों से ही व्यवसाय शुरू करना चाहिए।

इसलिए मुर्गी–पालन व्यवसाय शुरू करने के पहले इस बात का निर्णय कर लेना चाहिए कि अंडा डद्योग करना है या मांस उद्योग तथा उसी प्रकार के नस्लों को रखना चाहिए। छोटे तथा मध्यम श्रेणी के मुर्गी–पालकों के लिए यह श्रेस्कर होगा कि वे व्यवसायकि नस्लों की मुर्गियों ही रखें।

–: मुर्गियों का वर्गीकरण :–

अमेरिकन	इंगलिश	भूमध्यसागरीय	एशियाई	देशी	उन्नत
रेड आइलैण्ड रेड प्लाई माउथरौक न्यू हैम्पशायर वायन्डौढ	ससेक्स औरपींगटन आस्ट्रॉलार्प कौरनीस	व्हाईट लेगहॉर्न मीनोरका	ब्रह्मा कांचीन	असील, घैघस चटगॉव, ब्रह्मा, कोचिन, कड़कनाथ	झारसिम, कैरी श्यामा

विभिन्न नस्लों के संबंध में कुछ जानने योग्य निम्नलिखित बातें हैं :–

रेड आइलैण्ड रेड– इस नस्ल के पक्षी का शरीर लम्बा और गोलाकार होता है। गहरे लाल या भूरापन लिए हुये लाल रंग के इन पक्षियों की पूछ और उसके पास के हँसुआनुमा पर का रंग काला तथा आँख और कान के पास का स्थान लाल रंग का होता है। इसके दो प्रकार है। रोज कौम्ब और सिंगल कौम्ब की मुर्गियाँ ज्यादा प्रचलित हैं। इस नस्ल के मुर्गे का मानक वजन साढ़े आठ पौंड होता है और मुर्गी का साढ़े सात पौंड होता है। इस नस्ल की मुर्गियाँ किसी भी जलवायु में पाली जा सकती हैं तथा साल में औसतन 160–170 अण्डे देती हैं।

प्लाईमाउथ रॉक : इसका शरीर लम्बा और सीना उभरा हुआ होता है। इस नस्ल में कई रंग के पक्षी होते हैं उजला, पीला, नीला, धारीदार आदि। मुर्गा का मानक वजन 9 पौंड तथा मुर्गी का मानक वजन साढ़े सात पौंड होता है।

न्यू हैम्पशायर : इस नस्ल के सभी पक्षी का आकार आयताकार होता है। इस नस्ल के पक्षी का पंख बादामी रंग का होता है तथा ये सिंगल कौम्ब वाले होते हैं। इसके मुर्गे का वजन 8 पौंड तथा मुर्गी का 6 पौंड होता है।

वायन्डौट : मांस उत्पादन के लिए यह बहुत अच्छी नस्ल है। गोलाकार शरीर रोज कलंगी, पीला चमड़ा तथा छोटी पीठ इस नस्ल के मुर्गियों की खास पहचान है। इस नस्ल के मुर्गी कई प्रकार के होते हैं। उजले, पीले, सुनहले, चितकबरे आदि। इन पक्षियों का मानक वजन इस प्रकार होता है– मुर्गा साढ़े आठ पौंड, मुर्गी साढ़े 6 पौंड।

ससेक्स : इस नस्ल के शरीर का आकार लम्बा और गहरा होता है। सीना गोश्त से उभरा होता है। चोंच का रंग मटमैला और काला होता है। इस नस्ल के पक्षी तीन प्रकार के होते हैं– (1) लाइट (हल्का) ससेक्स (2) रेड (लाल) ससेक्स (3) स्पेक्ल्ड (चितकबरा) ससेक्स। इनमें लाइट ससेक्स ज्यादा प्रचलित है। इस नस्ल के पक्षी का मानक वजन प्रकार होता है– मर्गा 9 पौंड, मुर्गी 7 पौंड वयस्क मादा 6 पौंड।

औरपींगटन : इस नस्ल के पक्षी का शरीर गहरा और लम्बा होता है। भरा हुआ सीना और चौड़ी पीठ इन पक्षियों की खास पहचान है। यह सिंगल कौम्ब वाला पक्षी है। इस पक्षी का मानक वजन इस प्रकार है– मुर्गा 10 पौंड, मुर्गी 8 पौंड, वयस्क नर तथा मादा का क्रमशः साढ़े आठ तथा 6 पौंड होता है।

आस्ट्रॉलार्प : जैसा कि नाम से ही जाहिर है, यह नस्ल आस्ट्रेलिया में विकसित की गयी है। यह एक द्विप्रयोजनीय नस्ल है। इसकी पीठ लम्बी और शरीर पूंछ की ओर ढालुआं होती है। इस नस्ल के पक्षियों की चोंच और पैर का रंग काला तथा पंख का रंग हरा और काला मिला हुआ होता है। यह नस्ल भारत में काफी तेजी से प्रचलित हो रही है। नर आस्ट्रेलार्प और मादा लेगहोर्न के संयोग से आष्ट्रॉव्हाइट नामक एक नस्ल विकसित की गयी है जो अधिक अण्डोत्पादक हैं। इस पक्षी का मानव वजन– मुर्गा 8 पौंड,मुर्गी 6 पौंड, वयस्क नर और मादा का क्रमशः साढ़े सात और साढ़े पॉच पौंड होता है।

कौरनीस : यह नस्ल भारतीय असील और इंगलिस गेम नामक नस्ल के संयोग से तैयार की गयी है। इस नस्ल के गहरे और उजले रंग के मुर्गा और मुर्गी का वजन क्रमशः 10 पौंड और 8 पौंड होता है। व्हाइट लेसेड और लाल रंग के पक्षी का मानक वजन इस प्रकार होता है– मुर्गा 8 पौंड, मुर्गी 6 पौंड।

लेग होर्न : छोटी कद छोटा सिर, सिंगल कौम्ब, चौड़ा सीना और लम्बे पैर इस नस्ल की खास पहचान है। इसके कई रंग होते हैं। पर उजला रंग ज्यादा प्रचलित है। नर पक्षी की पूंछ खड़ी तथा मादा की गिरी हुई होती है। चोंच, चमड़ा और पैर का रंग पीला होता है। यह अण्डा देना जल्दी शुरू करती है और काफी दिनों तक देती है। इस नस्ल की ब्राउन लेग होर्न भी अपने आकर्षक रंग के कारण अब काफी प्रचलित होने लगी है। इन पक्षियों का मानक वजन इस प्रकार होता है–मुर्गा 6 पौंड, मुर्गी साढ़े चार पौंड।

मीनोरका : इस नस्ल के पक्षी अपने शरीर की लम्बाई तथा ऊंची कलंगी के लिए विख्यात हैं। इसका मांस तन्तु भी काफी लम्बा होता है। इस नस्ल के पक्षी सिंगल कौम्ब और रोज कौम्ब दोनों होते हैं। लेकिन सिंगल कौम्ब ज्यादा प्रचलित है। इसकी चोंच काली होती है। पैर का रंग भी काला या गहरा सिलेटी होता है। मुर्गा का मानक वजन 8 पौंड मुर्गी साढ़े छः पौंड।

बह्मा : इस नस्ल के पक्षी बह्मपुत्र नदी के आसपास पाए जाते हैं। इसके पर बहुरंगी होते हैं। इसके कई रंग होते हैं। इस नस्ल की मुर्गियाँ सभी मुर्गियों मे बड़ी तथा वजनदार होती है। इसके पैर रोएंदार होते हैं। मुर्गा और मुर्गी का मानक वजन क्रमशः 12 पौंड और साढ़े नौ पौंड होता है।

कोचिन : इसे पहले शंघाई पक्षी के नाम से पुकारा जाता था। इस नस्ल के पक्षी काफी वजनदार होते हैं। ये सिंगल कौम्ब वाले होते हैं। इसका रंग काला, उजला वफ या बूंदेदार हो सकता है। वयस्क नर और वयस्क मादा का वजन क्रमशः साढ़े आठ पौंड और साढ़े सात पौंड होता है।

देशी : देशी नस्लों की मुर्गियॉ बहुत कम अण्डे देती है। लेकिन अण्डा सेने का कार्य अच्छी तरह करती हैं।

असील : इस नस्ल के पक्षी देखने में आकर्षक और आकार मे बड़े होते हैं। मुर्गा और मुर्गी की चोंच मजबूत और खोपड़ी प्रशस्त होती है। लम्बी गर्दन, गोलाकार शरीर, चौड़ा सीधी पीठ इस नस्ल के पक्षियों की प्रमुख पहचान है। इसके पर बहुत कम होते हैं। पैर मोटे और लम्बे होते हैं। इसके कई प्रकार हैं, जिसमें इरान हैदराबाद पील भूरी (उजला) चारबूद (काला और लाल) धूमर (नीला) टीकर (भूरा) आदि प्रमुख है। ये प्रजाति 'झारखण्ड' में पाई जाती है। मनोरंजन के लिए इस नस्ल के पक्षी ही प्रचलित हैं। मुर्गियॉ बहुत कम अण्डे देती हैं, लेकिन इसका मांस स्वादिस्ट होता है। मुर्गा और मुर्गी का मानक वजन 10 पौंड और 9 पौंड होता है। ये लड़ाकु प्रजाति की है।

घैघस : यह मांस के लिए अधिक उपयोगी है। इसके पैर में रोएं होते हैं। मुर्गियाँ अधिक अण्डे देती हैं और सेती भी है।

चटगांव : इसे मलय भी कहते हैं। इन नस्ल का मुर्गा काफी बड़ा होता है। मुर्गियॉ अधिक अण्डे देती हैं। लेकिन सेने का काम ठीक से नहीं करती। यह विशेषकर मांस उत्पादन के लिए ही पाली जाती हैं। इसके कई रंग होते हैं। मुर्गा का वजन 8 से 10 पौंड और मुर्गी का वजन 7 से 8 पौंड तक होता है।

मुर्गियों का चुनाव : मुर्गीपालन के लिए हमेशा ऐसी मर्गियॉ पाली जाये जो अधिक और बड़े अण्डे देने वाली हो। अच्छी मुर्गी का चुनाव करते वक्त निम्न लक्षणों को ध्यान में रखना चाहिये। अच्छी मुर्गी के सिर चौड़े तथा विस्तृत होते हैं, सकरे या गोलाकार नहीं। कलंगी लाल और चमकदार होती हैं, ऑख तेजस्वी होती हैं। छाती विस्तृत और चौड़ी हाती है। पेट बड़ा होता है। त्वचा कोमल तथा लचीला होता है। जंघनास्थि विस्तृत तथा चौड़ा होता है तथा योनिमुख अंडाकार और मुलायम होता है।

नर का चुनाव करते वक्त यह ध्यान में रखना चाहिये कि अच्छे नर से अच्छी संतति प्राप्त होती है। अतः अच्छे लक्षण और प्रजनन कार्य सक्षम मुर्गा का ही चुनाव करना चाहिए। आजकल हमारे देश में देशी मुर्गियों का सुधार करने के लिये उन्हें विदेशी मुर्गों से प्रजनन कराकर सुधर कराया जाता है। इससे उत्पन्न संकर मुर्गियों की अंडा देने की क्षमता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त कई मुर्गी फार्मों में अण्डा वाली और मांस वाली मुर्गियों को अनेक विदेशी नस्लों से संस्करण द्वारा उप–नस्ल भी पैदा की जाती है जैसे– रेड दिव्यायन, केरी।

साजोसमान की खरीदारी

ब्रायलरपालन के लिए कुछ जरूरी साजोसामान की जरूरत पड़ती है। इसलिए इन सामानों की खरीदारी बाजार से कर लें। कुछ तो आप खुद भी बना सकते हैं।

1 *ब्रूडर–* एक दिन के चूजे के शरीर पर पंख नहीं होते हैं। इसलिए इसे गर्मी की आवश्यकता होती है। आवश्यक गर्मी ब्रूडर द्वारा दी जाती है। ब्रूडर लकड़ी, लोहे के चदरा या बॉस का होता है। यह टोकरीनुमा या चौकोर होता है। इसमें बल्ब या हीटर लगे होते हैं। यह सबसे सस्ता और सुरक्षित है।

(क) बाँस की टोकरी का ब्रूडर– यह 3 या 4 फीट व्यास का होता है जिससे 250 चूजों को गर्मी पहुचाई जाती है। बॉस की इस टोकरी में 4 बल्ब लगाए जाते हैं। टोकरी का ऊपर वाला हिस्सा पुराने अखबार से मढ़ दिया जाता है ताकि बल्ब की गर्मी बाहर नहीं जा सके।

(ख) बुखारी– यह एक तरह की लकड़ी की कुन्नी का चूल्हा है। इसमे धुआँ बाहर निकलने की व्यवस्था रहती है। जाड़े में यह बहुत उपयोगी है।

(ग) किरासन तेल का ब्रुडर– यह लोहे के चदरे का बक्सा होता है। इसमें किरासन लैम्प या लालटेन रखने की जगह बन होती है। इससे चूजे को पर्याप्त गर्मी मिलती है।

2 *चिकगार्ड–* यह ब्रूडर के चारों तरफ घेरा बनाने के काम आता है। चिकगार्ड लोहे के चदरे लकड़ी या मोटे कूट का बना होता है। इसकी ऊँचाई डेढ़ फीट होती है। चिकगार्ड का घेरा ब्रूडर से डेढ़ से दो फीट की दूरी पर लगाया जाता है ताकि चूजे उसी घेरे में रहकर दाना–पानी ले सकें। चिकगार्ड से ठंडक से बचाव होता है और गर्मी भी मिलती है। अगर बाजार से खरीदने में कठिनाई हो तो आप लकड़ी के तख्ता या ईंट से भी चिकगार्ड का काम ले सकते हैं।

3 *फीडर–* जिस बर्तन में ब्रायलर दाना खाता है, उसे फीडर कहते हैं। यह टिन, लकड़ी या बॉस का बना होता है। फीडर दो तरह का होता है– एक चिक फीडर, दूसरा ग्रोवर फीडर। चिक फीडर में चार हफ्ता तक के चूजे को खाना दिया जाता है। ग्रोवर फीडर में चार से छह सप्ताह तक के ब्रायलर को खाना दिया जाता है। दोनों फीडर की बनावट एक जैसी होती है। इनके ऊपर लोहे के तार का ग्रिल लगी होती है। हैगिंग फीडर यानी लटकता हुआ फीडर लोहा अल्युमिनियम या प्लास्टिक का बना होता है। इसमें चूजे के लिए दिन भर का खुराक एक ही बार रखकर लटका दिया जाता है।

4 *ड्रिंकर–* यह चूजे के लिए पानी का बर्तन है। यह दो तरह का होता है। वाटर फांउटेन और वाटर वेसेला वाटर फाउंटेन 2 और 4 लीटर का होता है। यह प्लास्टिक, टिन, अल्युमिनियम या मिट्टी का बना होता है। 1 से 4 सप्ताह तक की उम्र के चूजे को वाटर फाउंटेन द्वारा पानी पिलाया जाता है। वाटर वेसेल लोहे का चदरा, प्लास्टिक या मिट्टी का बना होता है। इस पर लोहे के तार की ग्रिल लगी होती है ताकि ब्रायलर बर्तन के अन्दर न घुस सकें। यह 4 लीटर तक का होता है। 4 से 6 सप्ताह तक के ब्रायलर को इससे पानी पिलाया जाता है।

5 *कैचिंग हुक–* ब्रायलर को जब पकड़ना होता है, तब उसे कैचिंग हुक द्वारा पकड़ा जाता है। यह लोहे की छड़ का बना होता है। इसकी लम्बाई तीन या साढ़े तीन फीट की होती है। मोटाई एक सूत के बराबर हाती है। इसमें एक तरफ पकड़ने के लिए हैंडल लगा होता है और दूसरी तरफ हुक की तरह मुड़ा रहता है। इसे आप खुद भी बना सकते हैं।

6 *क्रेट–* इसमें तैयार ब्रायलर को रखकर बिक्री के लिए बाजार ले जाया जाता हैं यह लोहा, लकड़ी या बॉस का बना होता है। बॉस का क्रेट टोकरीनुमा होता है जो 4–5 फीट ब्यास को होता है आपके पास अपना क्रेट होना जरूरी है। दूसरे या बाहरी आदमी का क्रेट इस्तेमाल करने से ब्रायलर पालनेवाले क्षेत्र में बीमारी फैलाने का खतरा रहता है।

7 *स्प्रेयर–* इसके जरिये मुर्गीखाना के अन्दर और बाहर दवा का छिड़काव होता है। यह फसलों पर दवा का छिड़काव करने वाले स्प्रेयर की तरह होता है।

8 *ब्लो लैम्प–* इसमें से आग की लौ निकलती है। इस लौ से दीवारों और फर्श पर जमे छोटे–छोटे कीटाणुओं को मारने का काम लिया जाता है।

9 *थर्मामीटर*– यह ब्रायलर के कमरे की गर्मी यानी तापक्रम मापने के काम आता है।

10 *तराजू*– यह ब्रायलर के वजन को नापने के काम में लाया जाता है।

1500 ब्रायलर वाले एक मुर्गीखाने के लिए निम्नलिखित संख्या में सामानों की आवश्यकता होती है–

ब्रूडर –	06	बुखारी	–3	चिक गार्ड –	03 सेट
चिक फीडर–	30	वाटर वेसेल	–20	स्प्रेयर –	01
हैंगिंग फीडर–	48	वाटर फाउंटेन	–16	थर्मामीटर –	06
कैंचिंग हुक–	01	ब्लो लैम्प – 1		तराजू –	01
क्रेट –	04				

ब्रायलर चूजे का चुनाव–

ब्रायलर के चूजे की खरीदारी से पहले कुछ बातों को जान लेना जरूरी है। जरा–सी असावधानी से नुकसान होने का खतरा रहता है। हैचरी में आमतौर पर निम्नलिखित कम्पनियों के चूजे मिलते हैं–

1. हबर्ड 2. आर्ब एकर 3. व्हेन कॉब 4. अनक–2005 5. रॉस 6. स्टार ब्रो 7. हब चिक्स 8. एवियन–34 अच्छे चूजे की खरीद के लिए अपने जिला के कुक्कुट विशेषज्ञ या राज्य के संयुक्त निदेशक, कुक्कुट से सम्पर्क कर लें उनसे आपको इस बात की जानकारी मिल जाएगी कि किस कम्पनी की हैचरी का चूजा अच्छा होगा। उनके पास विश्वसनीय जानकारी रहती है। ध्यान रखें कि ऐसे चूजे चुनाव करें, जिनका वजन 6 सप्ताह में तीन किलो दाना खाकर कम से कम पौने दो से दो किलो का हो जाए तथा मृत्यु दर 3 प्रतिशत से अधिक नहीं हो।

खरीदारी के समय इस बात का भी ध्यान रखें कि चूजा एक दिन का हो। उसका वजन लगभग 40 ग्राम हो और वह पूरी तरह से स्वस्थ चूजे की पहचान यह है कि वह चंचल और फूर्तीला होता है। उसके पैर का चमड़ा चमकीला और चिकना होता है। ध्यान रखें कि चूजे में कोई ऐब नहीं हो। यानि उसकी नाभि गीली नहीं हो। गीली होने से वह काली नजर आएगी। चूजे की ऑख टेढ़ी या बंद नहीं हो। उसकी चोंच कैंचीनुमा न हो। पैर भी टेढ़ा न हो। चूजे विचौलियों से कभी न खरीदें। ये बिचौलिये अंडा देने वाली मुर्गी के चूजे और ब्रायलर के चूजे दोनों की आपूर्ति करते हैं जिससे चूजे का निर्धारित वजन नहीं आ पाता है। ब्रायलर का चूजा 3 किलो दाना खाकर 6 सप्ताह में दो किलो का हो जाता है जबकि अंडा देने वाली मुर्गी का चूजा 10 किलों दाना खाकर छह माह में डेढ़ किलो वजन का होता है। बिचौलिये एक काम और करते हैं। वे हैचरी के छँटे हुए ऐबदार चूजों को खरीदकर पालने वालों के हाथों बेच देते हैं। ये ऐबदार चूजे 6 हफ्ते से पहले ही काफी संख्या में मर जाते हैं। 1500 चूजे के एक साथ कभी न खरीदें बल्कि 250 की खेप सात–सात दिन पर खरीदें।

बिछाली (लिटर) –

ब्रायलर चूजों का पालन–पोषण लकड़ी की कुन्नी के नर्म और मोटे बिस्तर पर होता है। इसे बिस्तर को बिछाली कहते हैं। बिछाली फर्श पर दो से चार इंच मोटी बिछा दी जाती है। बिछाली नमी को सोख लेती है। हमारे यहाँ ज्यादातर लकड़ी की कुन्नी की बिछाली ही काम में लाई जाती है। इसक बदले धान का भूसा भी प्रयोग में लाया जाता है। 250 चूजे के लिए शुरू में 6 बोरा और कुन्नी बिछाई जाती है। ताकि सावधानी बरतने की जरूरत

होती है जैसे –

- बिस्तर को रोजाना दोपहर मे उलट–पलट देना चाहिए।
- हर पन्द्रह दिन पर डेढ़ किलो चूना का पाउडर मिला देना चाहिए। इस तरह एक खेप पालने में तीन बार बिछाली में चूना डालने की जरूरत होगी।
- ड्रिंकर की जगह रोजाना बदलते रहना चाहिए। इससे पता चलता है। कि ड्रिंकर के नीचे की बिछाली भीगी है या नहीं। अगर बिछाली भीगी हो तो उसे बाहर फेंककर उसकी जगह सूखी कुन्नी डाल दी जानी चाहिए।
- जगह के अनुसार ब्रायलर पालना चाहिए ताकि हरेक ब्रायलर को रहने के लिए कम से कम एक वर्गफीट जगह मिल सके। ऐसा करने से बिछाली बराबर सूखी रहेगी।

बिछाली गीली होने के कारण –

1. हवादार नहीं रहने से 2. बिस्तर पतला रखने से 3. ड्रिंकर में रिसाव होने से 4. ड्रिंकर को ब्रायलर की पीठ की उचाई के बराबर नहीं रखने से
5. बिछाली को रोजाना नहीं पलटने से 6. चूजे को गंदा पानी पिलाने से
7. फफूंदी या ज्यादा नमक वाला दाना देने से 8. पुरानी बिछाली पर नया चूजा पालने से।

जरूरत के दूसरे सामान के साथ–साथ कुन्नी या धान का भूसा भी खरीदकर रख लें। प्रति खेप के लिए 16 बोरा लकड़ी की कुन्नी की जरूरत होगी। हरेक बोरे में लगभग 50 किलो कुन्नी रहती है। कारोबार शुरू करने के समय 20 बोरा कुन्नी की आवश्यकता होगी।

पर्दा– पर्दा चूजे को गर्मी के दिनों में धूप और लू से बचाता है। जाड़े में ठंड से और बरसात में पानी के झपास से बचाता है। पर्दा मुर्गीघर की खिड़की पर लगाया जाता है। मुर्गीघर की कुल 28 खिड़कियों के लिए आपको 28 पर्दे की जरूरत होगी। यहा पर्दे 6 फीट लम्बे और 5 फीट चौड़े रहेंगे। पर्दे को मौसम और दवा की जरूरत के अनुसार उठाते–गिराते रहें।

पालन–पोषण

साजोसमान और दाना–पानी की व्यवस्था करने के बाद मुर्गीखाने में चूजा लाने की तैयारी शुरू कर दें। यह तैयारी इसलिए जरूरी है। ताकि चूजे को पालन–पोषण के लिए नियंत्रित वातावरण मिल सके।

चूजा लाने से पहले की तैयारी–

मुर्गीघर के पूरब वाले नं0 1 कमरे को बोरा या प्लास्टिक की चादर की मदद से दो भागों में बाँट दे। पानी की निकासी के लिए बनाए गए सूराख को भरने और फर्श को अच्छी तरह से साफ कर लेने के बाद इस पर 2 इंच मोटी बिछाली बिछा दें। इसके बीच में चिकगार्ड द्वारा 5 फीट व्यास का घेरा बना दें। घेरे के अन्दर बिछाली पर दो तह पुराना अखबार बिछा दें। इसके बाद बिछाली से एक फुट की ऊँचाई पर ठीक बीच मे बल्ब लगा ब्रूडर लटका दें। इसके बाद 4 चिक फीडर और 4 वाटर फाउटेंन को कमरे के अन्दर रख लें।

यह सब करने के बाद खिड़कियों के पर्दे गिरा दें। पर्दा गिराने बाद कमरे में फार्मल्डिहाइड गैस छोड़ दे। इसका तरीका यह है कि दो–तीन आदमी मिलकर कमरे में पाँचों बर्त्तन में इसका एक–एक हिस्सा डाल दें। फॉर्मलिन डालने के तुरंत बाद गैस निकलनी शुरू हो जाती है। इसलिए जल्दी से बाहर निकल जाएँ। इस गैस का आँख पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बाहर निकलकर दरवाजा बंद कर दें और पर्दा ठीक से गिरा दें।

ताकि गैस बाहर न निकले। इस गैस से बिछाली, ब्रूडर, ड्रिंकर, फीडर वगैरह में लगे कीटाणु मर जाएँगे। तीन घंटे के बाद पर्दे को एक घंटा के लिए उठा दें ताकि गैस बाहर निकल जाए। एक घंटे बाद दुबारा पर्दे गिराकर बुखारी, लैम्ब ब्रूडर या बिजली का ब्रूडर जला दें। इस हालत में कमरे को 24 घंटे तक छोड़ दें। इसके कमरा पूरी तरह गर्म हो जाएगा। कमरे में चूजा लाने से चार घंटा पहले चिकगार्ड के अन्दर पानी भरे चार वाटर फाउंटेन रख दें। इतनी देर में कमरे के साथ–साथ पानी भी हल्का गर्म हो जाएगा। इस तरह कमरा चूजा लाने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाएगा।

चूजा लाने के बाद की सावधानी–

चूजा के आते ही उसे बक्सा समेत कमरे के अन्दर ले आएँ। फिर बक्से का ढक्कन खोल दें। एक–एक करके सारे चूजों को इलेक्ट्रल पाउडर मिला पानी पिलाकर ब्रूडर के नीचे छोड़ते जाए। बक्से में अगर ऐबदार चूजा हो तो उसे बाहर हटा दें। इसके अलावा 2 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से इलेक्ट्रल पाउडर को पानी के चारो बर्तन में भी डाल दें।

जब चूजे पानी पी ले तो उसके तीन घंटे बाद अखबार पर मकई का दर्रा छींट दें। चूजे इसे खाना शुरू कर देंगे। इस दर्रे को 12 घंटे तक खाने के लिए देना चाहिए। दूसरे दिन से प्री–स्टार्टर दाना मकई के दर्रे के साथ कागज पर छींट दें। तीसरे दिन से प्री–स्टार्टर दाना दें। दाना फीडर में देने के साथ–साथ अखबार पर भी छीटें। प्री–स्टार्टर दाना 7 दिन तक दें। चौथे दिन से दाना सिर्फ फीडर में ही दें। अखबार पर न छींटे आठवें रोज से 28 दिन तक ब्रायलर को स्टार्टर दाना दें। 29 से 42 दिन तक फिनिशर दाना खिलाएँ। दूसरे दिन से पाँचवे दिन तक पानी मे नियोडाक्स या कोई दूसरी एन्टीबायोटिक्स दवा मिलाकर दें। पाँच दिन तक यह दवा देने से चूजे को किसी प्रकार की बीमारी पकड़ने का खतरा नहीं रहता।

चूजा जैसे–जैसे बढ़ता जाए, दाना और पानी के बर्तन की ऊँचाई चूजे की पीठ की ऊँचाई के बराबर बढ़ाते जाएँ। इन्हें उचा करने के लिए आप ईंट का सहारा ले सकते हैं। रस्सी से टाँग कर भी इनकी ऊँचाई बनाए रख सकते हैं।

तापमान–

जैसे–जैसे चूजे को पंख निकलते जाते हैं वैसे–वैसे उसे गर्मी की आवश्यकता कम होती जाती है। आवश्यकता के अनुसार गर्मी बनाए रखने के लिए निम्नलिखित तापमान निर्धारित किया गया है।

सप्ताह	*ब्रूडर का तापमान*	*कमरे का तापमान*
1	95 डिग्री फॉरेनहाइट	85 डिग्री फॉरेनहाइट
2	90 डिग्री फॉरेनहाइट	80 डिग्री फॉरेनहाइट
3	85 डिग्री फॉरेनहाइट	75 डिग्री फॉरेनहाइट
4	80 डिग्री फॉरेनहाइट	70 डिग्री फॉरेनहाइट
5	75 डिग्री फॉरेनहाइट	70 डिग्री फॉरेनहाइट
6	70 डिग्री फॉरेनहाइट	70 डिग्री फॉरेनहाइट

तापमान जॉचने के लिए कमरों में थर्मामीटर रख दें। इसी से समय–समय पर निर्धारित तापमान की जॉच होती रहेगी। अगर तापमान की जॉच करने के लिए थर्मामीटर न हेा तो चूजे के व्यवहार से गर्मी का पता चल जाता है। निर्धारित तापमान पर चूजे बिखरे रहेगें। अगर तापमान जरूरत से कम रहेगा तो चूजे बल्ब के नीचे एक जगह इकट्ठा हो जाते

हैं। अगर तापमान निर्धारित डिग्री से अधिक रहेगा तो चूजे ब्रूडर से बाहर चले जाते हैं। और चिकगार्ड से सटे रहते हैं। ब्रूडर में आमतौर से बिजली के चार बल्ब लगे रहते हैं। ये आवश्यकतानुसार 100 या 200 वाट के होते हैं। दिए गए चार्ट के तापमान को बनाए रखने का तरीका इस प्रकार है–

पहले सप्ताह में रात बल्ब जलाएँ	4	– दिन में 4 बल्ब जलाएँ
दूसरे " " " "	4	– " " 3 " "
तीसरे " " " "	3	– " " 2 " "
चौथे " " " "	2	– " " 1 " "
पाँचवें " " " "	2	– दिन में सारे बल्ब बुझा दें
छठे " " " "	1	– " " " " " "

अगर आप बिजली ब्रूडर की जगह बुखारी से गर्मी पहुँचाने का काम लेगें, तो उससे भी तापमान नियंत्रित हो सकता है। बिजली की आपूर्ती बंद हो गई हो तो चूजों को बुखारी द्वारा गर्मी दें। मौसम के अनुसार अपनी समझ से तापमान नियंत्रित करें।

रोशनी– ब्रायलर के कमरे में रोशनी का होना भी बहुत जरूरी है। रोशनी नहीं होने से सारे चूजे एक जगह इकट्ठा हो जाते हैं। ऐसा होने से उसमें घुटन होती है और फिर उनकी मौत हो जाती है। इसलिए पहले सप्ताह से छठे सप्ताह यानी ब्रायलर के बेचे जाने तक 23 घंटे 15 वाट का बल्ब जलाएँ। किसी निर्धारित समय पर दिन में एक घंटा बल्ब बुझा दें। बिजली न हो तो लालटेन जलाएँ। याद रहे, ब्रायलर को 23 घंटे रोशनी अवश्य दें।

मौसम– जिस तरह मौसम के अनुसार हमलोग अपने रहन–सहन में बदलाव लाते हैं। उसी तरह ब्रायलर के पालन–पोषण के ढंग में कुछ न कुछ बदलाव लाना पड़ता है। उनके लिए कुछ विशेष व्यवस्था करनी पड़ती है।

जाड़ा – जाड़ा के मौसम में मुर्गीखाना को गर्म रखना पड़ता है। अगर चूजे को गर्मी पूरी नहीं मिले तो वे खाना ज्यादा खाते हैं। गर्मी की कमी से चूजे को जितना बढ़ना चाहिए उतना नहीं बढ़ पाते। इसके कारण आपको घाटा उठाना पड़ सकता है। इसलिए जाड़े के मौसम मे कमरे को गर्म रखें।

गर्मी – गर्मी के मौसम में धूप तेज हो जाती है। लू भी चलने लगती है। इससे मुर्गीखाना गर्म हो जाता है। गर्मी की वजह से चूजे कम खाना खाते हैं। और निर्धारित वजन नहीं दे पाते। इसलिए गर्मी में मुर्गीखाने को ठंडा रखें। मुर्गीखाने को ठंडा रखने के लिए उसके दक्षिण ओर चार फीट की दूरी पर बोरे का पर्दा लगा दें। इसके अलावा मुर्गीखाना की छत पर 6 इंच मोटा फूस या पुआल बिछा दें। इससे छत गर्म नहीं होगी। अगर संभव हो तो छत पर फव्वारा लगा दें। यह बाजार में मिलता हैं। कमरे मे कूलर भी लगा सकते हैं। इसके अलावा बिछाली की मोटाई केवल 2 इंच कर दें। गर्मी के दनिो मे चूजे पानी ज्यादा पीते हैं, इसलिए पानी के बर्तन की संख्या बढ़ाकर दुगुनी कर दें। चूँकी गर्मी में चूजे खाना कम खाते हैं। इसलिए खाने में 2 प्रतिशत प्रोटीन, मिनरल, एंटीस्ट्रेस, सेलेनियम और विटामिन ई0, की मात्रा बढ़ा दें। ऐसा करने से अगर चूजे कम खाना खाएँगे तब भी बढ़त बरकरार रहती है। इसके लिए दाना उत्पादन को विशेष रूप से हिदायत दें। इस मौसम मे खाना 4 बजे सुबह में खिलाएँ।

बरसात– बरसात का मौसम कष्टदायक होता है। इस मौसम में बीमारियाँ ज्यादा फैलती

हैं। इसलिए बरसात के मौसम में विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है। बरसात में वातावरण मे नमी बहुत होती है जिसक कारण बिछाली ठीक से सूख नहीं पाती। बिछाली से जहरीली गैस निकलती रहती है। इस दौरान पंखे का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा करें ताकि अंदर की विषैली गैस बाहर निकल जाए। यदि गैस बाहर नहीं निकाला जाएगा तो चूजे का विकास नहीं होगा। इस मौसम मे एक दिन मे तीन बार बिछाली को उलटें। जितनी बिछाली उलटेंगे जहरीली गैस और गंदी हवा उतनी ही बाहर निकलेंगीं।

(क) चूजों की खुराक : चूजों की पहली खुराक अण्डे से निकलने के 48 घंटे बाद दी जाती है। चूजों के लिये साफ पानी का प्रबंध हमेशा रहना चाहिये। चार–पाँच सप्ताह के बाद फोस्टर मदर हटा देना चाहिए क्योंकि इसके बाद चूजों को गर्मी की आवश्यकता नहीं पड़ती।

चूजों (0–8 सप्ताह तक) के लिये एक खुराक मिश्रण

1	दली हुई पीली मकई	32 किलो
2	मुंगफली की खल्ली	25 किलो
3	चावल की कुन्नी	20 किलो
4	गेहूँ का चोकर	10 किलो
5	मछली का चूरा	10 किलो
6	हड्डी का चूर्ण तथा बुझा हुआ चूना का मिश्रण	2½ किलो
7	नमक	300–500 ग्राम

उपयुक्त मिश्रण में विटामिन जो बाजार में विटाब्लेंड अथवा रोवीमिक्स के नाम से उपलब्ध है उन्हें 20 ग्राम प्रति 100 किलोग्राम मिश्रण में मिलाना चाहिये। साथ ही खूनी दस्त (कौक्सी डियोसिस) से बचाव के लिये एम्बाजीन प्रिमिक्स 50 ग्राम बाईफुरान, एम्प्रोलियम या अन्य दवा मिलाना चाहिये। उपयुक्त मिश्रण चूजों को आधा औंस से दो औंस तक के हिसाब से देना चाहिये। साथ ही जल की मात्रा 1 औंस से 4 औंस प्रति चूजा के लिए प्रतिदिन उपलब्ध होना चाहिये। इस मिश्रण से चूजों को करीब 20 प्रतिशत प्रोटीन प्राप्त होगा

(ख) बढ़ते हुये तथा अण्डा देने वाली मुर्गियों की खुराक :

एक अच्छा मिश्रण –

1	दली हुई पीली मकई	25 किलो
2	दली हुई जई	15 किलो
3	मूंगफली की खल्ली	20 किलो
4	गेहूँ का चोकर	20 किलो
5	मछली का चूरा	5 किलो
6	चावल की कुन्नी	10 किलो
7	मिश्रित खनिज चूर्ण	2 किलो
8	सीप का चूर्ण	2½ किलो
9	नमक	300–500ग्राम
	कुल	100 किलो

उपयुक्त मिश्रण 3 या 4 औंस प्रति दिन प्रति मुर्गी की दर से देना चाहिये। इसके अतिरिक्त अण्डा देने वाली मर्गियों को हमेशा हरा चारा (अजोला) तथा बूझे हुये चूने का चूरा प्राप्त होना चाहिये जल 6 से 8 औंस के अनुपात में प्रति मुर्गी को प्रतिदिन उपलब्ध होना चाहिये। इस मिश्रण से मुर्गियों को 16 प्रतिशत प्रोटीन प्राप्त होता है। 24 घंटे में एक बड़ी मुर्गी लगभग 4 औंस तक दाना खाती है।

ब्रोआयलर को दो प्रकार का आहार खिलाना चाहिए। प्रारंभिक आहार (प्री–स्टारटर) 0–1 सप्ताह (स्टारटर) 2 से 4 सप्ताह की उम्र तक तथा परिसज्जक आहार (फीनिशर राशन) 5 सप्ताह से बिक्री तक खिलाना चाहिए। ये दोनों प्रकार का आहार बाजार में उपलब्ध है। शुरू–शुरू में बाजार से खरीदकर खिलाना श्रेस्कर है।

स्वास्थ्य की देखरेख

जिस तरह हम अपने बाल–बच्चों के स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देते हैं, उसी तरह ब्रायलर के स्वास्थ्य की देखरेख भी जरूरी है। अगर उनके स्वास्थ्य पर समूचित ध्यान नहीं दिया गया तो उनका विकास रूक सकता है। यहाँ तक कि बीमारी और मृत्यु होने की संभावना भी रहती है। इसके लिए समय–समय पर टीका और सफाई की व्यवस्था जरूरी हैं।

ब्रायलर के स्वास्थ्य की देखरेख इस तरह करें–

- एक दिन के चूजे को पॉच दिन तक अखबार पर रखें। बिछे हुए अखबार को रोज बदल दें। पॉचवें दिन के बाद बिछे हुए अखबार को हटा दें। अब चूजे को बिछाली पर ही रखें।
- चिकगार्ड को घेरा रोजाना 6–6 इंच बढ़ाते जाएँ। आठवें दिन चिकगार्ड हटा दें।
- बिछाली को रोजना साफ करें। बिछाली का जितना हिस्सा भीगा हो उसे बाहर फेंक दें।
- उसकी जगह पर सूखी बिछाली रख दें पानी रखने की जगह हमेशा बदलते रहें। छह–सात दिन की उम्र में चूजे को रानीखेत का टीका एफ–1 आँख और नाक में एक–एक बूंद दें।
- 14 से 18 दिन की उम्र में गम्बोरो को टीका आईबीडी आँख और नाक में दे।
- 22 दिन की उम्र मे पीने के पानी मे लसोटा रानीखेत का टीका मिलाकर दें।
- 30 वें दिन गम्बोरो का फिर एक टीका दें। इसे भी पीने के पानी में मिलाकर दें।
- मरे हुए चूजे को कमरे से फौरन बाहर निकाल दें। नजदीक के अस्पताल या अपने पशु चिकित्सक से पोस्टर्माम करा दें। पोस्टमार्टम कराने से यह मालूम हो जाएगा कि चूजे की मौत किस बीमारी या कारण से हूई है।
- मुर्गीखाने के दरवाजे पर एक बर्तन या नाद में फिनाइल का पानी रखें। मुर्गीघर मे जाते और आते समय पैर धो लें। यह पानी रोज बदल दें।

सफाई– आमतौर से देखा गया है कि नए मुर्गीखाने में ब्रायलर पालने में ज्यादा कठिनाई नहीं होती है। लेकिन जैसे–जैसे मुर्गीखाना पुराना होता जाता है, वहाँ तरह –तरह की बीमारियॉ आने लगती है। जिसके कारण ब्रायलर पालनेवाले को घाटे का सामना करना पड़ता है। ये सारी परेशानियॉ गंदगी की वजह से होती हैं। इसलिए मुर्गीखाने और साजोसामान को बराबर साफ–सुथरा रखें।

- मुर्गीखाना के बाहर एक ड्राम या हौज रखें। उस में पानी भर दें। साथ ही प्रति लीटर पानी के हिसाब से कपड़ा धोनेवाला 10 ग्राम सोडा मिला दें। इस घोल में इस्तेमाल में आए खाने–पीने के बर्तन, ब्रूडर और पर्दा डाल दें। इन्हें 24 घंटे तक इस पानी में रखे। इसके बाद इन्हें अच्छी तरह से साफ पानी में धों लें। फिर 5 प्रतिशत फिनाइल या सेवलोन मिले पानी के घोल में इन्हें फिर धोकर धूप में सुखा दें।
- शेड के अंदर की छत, दीवार, किनारा तथा जाल को अच्छी तरह झाड़ू से साफ कर लें। तब बिछी हुई बिछाली को एक जगह इकट्ठा कर लें। फर्श को अच्छी तरह रगड़कर जमी हुई बिछाली को भी छुड़ा लें। सबकों बोरे मे भरकर सी लें और मुर्गीखाने के बाहर एक गड्ढे मे जमा कर दें।

- फर्श को सोडा के पानी से तीन इंच गइराई तक भर दें और 24 घंटे तक छोड़ दें। पानी भरने से पहले सूराख को बंद कर दें। 24 घंटे के बाद फर्श को झाड़ू से रगड़–रगड़कर साफ कर लें। फिर सूराख खोलकर पानी बाहर निकाल दें। इसके बाद फर्श को फिनाइल के पानी से अच्छी तरह धो दें। कमरे को सूखने के लिए छोड़ दें। सूखने के बाद कली चूना के घोल मे प्रति लीटर 3 प्रतिशत के हिसाब से तूतिया (कॉपरसल्फेट) मिला दें। घोल को अच्छी तरह मिलाने के बाद कमरे की फर्श दीवार इत्यादी को अच्छी तरह से पोत दें। इसे एक या दो दिन सूखने के लिए छोड़ दें।
- कमरा सूख जाने के बाद 2 इंच मोटी नई बिछाली बिछा दें। फिर पहले की तरह सारे सामान, जैसे खाने–पीने का बर्तन आदि रख दें। पर्दे को अच्छी तरह टाँग दें। इतना सब करने के बाद कमरें मे फार्मल्डिहाइड गैस छोड़ दें।
- इस बीच कमरे के बाहर पाँच फीट के क्षेत्र अच्छी तरह साफ करे लें। सफाई के बाद बाहरी दीवार और जाली पर दवा (फॉर्मालिन और अल्डीपाल) का छिड़काव कर दें। चारों तरफ प्लेटफार्म पर चूना का छिड़काव कर दें। इसके बाद अपना कमरा नए चूजे लाने के लिए तैयार हो जाएगा।

रोग– जरा–सी असावधानी से चूजे को तरह–तरह के रोग हो जाते हैं। कुछ रोग जानलेवा भी हो सकते हैं। मुर्गीखाने में रोग कई कारणों से आते हैं। आइए देखते हैं, चूजे को कौन–कौन से रोग होते हैं और इन बीमारियों के आने के कौन–कौन स्त्रोत है।

क्र0सं0	*रोग*	*बीमारी के आने के स्त्रोत*
1	सालमोनेला, मैरेक्स, सी.आर.डी.	बीमारी से प्रभावित प्रक्षेत्र के चूजे खरीदने से
2	इकोलाई (एक हफ्ते के अंदर)	खरीब व्यवस्था वाली हैचरी से चूजे खरीदने से
3	काक्सीडिओसिस, ब्रूडर निमोनिया, कोराइजा, इकोलाई	भीगी बिछाली से
4	अफलॉटाक्सीन डिसीज, डिफीसिएन्सी डिसीज	पुराना और असंतुलित दाना खिलाने से
5	इकोलाई, कालरा	गंदा पानी पिलाने से
6	कारोइजा, कॉक्सीडिओसिस, इकोलाई, सी.आर.डी., ब्रूडर निमोनिया	कम हवादार मकान रखने से
7	कॉक्सीडिओसिस, इकोलाई	गंदे साजोसमान से
8	रानीखेत, गम्बरो, चेचक (फाउल पाक्स), आई.बी0, क्रेजी चिक डिजीज	मुर्गीखाने में बाहरी लोगों के आने–जाने से
9	काक्सीडिओसिस, इकोलाई, कोराइजा	ब्रायलर की देखरेख करनेवाले की गंदगी और असावधानी से
10	ऊपर के सारे रोग	गुर्गीखाना और आसपास की सफाई की कमी से

अब इन लोगों के लक्षणों और उनसे बचाव के तरीकों को भी जान लें। चूजे का पशु चिकित्सालय में पोस्टमार्टम करा लें। खुद से पोस्टमार्ट करके भी रोग का पता चला सकते हैं।

1. रानीखेत (टुनकी)– यह बहुत भयानक बीमारी है। देखते–देखते पूरे इलाके में फैल जाती है। किसी भी उम्र के चूजे इसकी चपेट में आ सकते हैं। अपने और आसपास के मुर्गीखानें में रोजाना चूजे की मौत होने लगती है। उसे हरे रंग का पाखाना होता है। चूजे को बुखार भी रहता है। बुखार के कारण वह खाता–पीता नहीं है। सुस्त होकर अलग–थलग

बैठा रहता है। साँस लेने मे तकलीफ होती है। बिछाली पर चोंच रखकर सॉस लेता है।

पोस्टमार्टम– मरे हुए चूजे का पेट चीरने पर प्रोवेन्टीकूलस में ज्यादातर खूनी दाने और खून का रिसाव दिखाई देता है।

बचाव– सभी चूजों को फिर से आँख और नाम में एफ–1 का टीका लगाएँ। दूसरे दिन से पीने के पानी में प्रति लीटर दो ग्राम के हिसाब से टेरामाइसीन (पोल्ट्री फॉर्मूला) दें। कमरे का तापमान बढ़ा दें। कमरे के अंदर और बाहर एक सप्ताह तक लगातार फॉर्मलिन का छिडकाव करते रहें। एफ–1 लगाने के 48 घंटे के बाद एफ–2 रानीखेत का टीका सूई द्वारा चमड़े या मांस में लगाएँ।

2. गम्बोरो– यह एक वायरस की बीमारी है। यह बीमारी ज्यादातर तीन से छह सप्ताह की उम्रवाले ब्रायलरो में होती है। ब्रायलर को पानी की तरह उजला दस्त होता है। इस बीमारी से ब्रायलर मर जाते हैं।

पोस्मार्टम– मरे हुए ब्रायलर को चीरने पर सीने और जाँघ के मांस पर खून का धब्बा दिखाई देता हैं बरसा फूला हुआ होता है। बरसा को फाड़ने पर पीब मिलता हैं।

बचाव– इलेक्ट्रल पाउडर और विटामिन बी–कम्पलेक्स को मिलाकर पीने के पानी में दे तथा नेफ्टीन–200 एक ग्राम प्रति किलो के हिसाब से दाना में मिलाकर दें।

3. ओमफ्लाइटिस (नाभि में सूजन)– तीन दिन के चूजे में ही इस रोग के लक्षण दिखाई देने लगते हैं और वे इसके एक दो रोज बाद ही मरने लगते हैं। चूजे खाना नहीं खाते जिससे वे मरने लगते हैं। बीमार चूजे का पेट छूने पर कड़ा लगेगा और नाभि गीली रहेगी।

पोस्टमार्टम– पेट चीरने पर अंडे की जर्दी मिलेगी। जर्दी को फाड़ने से बदबू आएगी।

बचाव– चूजे को तुरंत जेन्टामाइसीन की सूई 0.2 या 0.4 ml देनी चाहिए। यह सूई चूजे की गर्दन के चमड़े में दी जाती है। साथ ही पीने के पानी में नियोडॅक्स एक ग्राम प्रति पाँच लीटर के हिसाब से मिलाकर दें। ऐसा पॉच दिन तक करें। बीमारी काबू में आ जाएगी।

4. सालमोनेला– यह रोग पैतृक है। जिस हैचरी से चूजे खरीद रहे हैं वहाँ से अगंली खेप बंद कर दें। सालमोनेला चूजे में पॉचवें से दसवें दिन के बीच पाया जाता है। चूजे को सफेद दस्त होता है। वह खाना नहीं खाता है। सभी चूजे एक जगह सिमट जाते हैं। देखने पर ऐसा लगता हैं कि उनको ठंड लग रही है।

पोस्टमार्टम– पेट चीरने पर अंडे की जर्दी मिलेगी। उसका रंग हरापन लिए हुंए पीला होगा और उसे फाड़ने पर बदबू निकलेगी।

बचाव– तीन दिन तक प्यूरासोल 1 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से पीने के पानी मे मिलाकर दें। जेन्टामाइसीन की सूई भी दें। इससे चूजे का मरना बंद हो जाता है। सात दिन तक नेफ्टीन 200 एक ग्राम प्रति किलो के हिसाब से दाना में मिलाकर दें।

5 ब्रूडर निमोनिया– यह सात से बारह दिन की उम्र में पाया जाता है। इस रोग में चूजे को साँस लेने में तकलीफ होती है। आँखें सूज जाती है। और उनमें से पानी आने लगता है।

पोस्टमार्टम– फेफड़ा और एअरसेक की झिल्ली पर साबुदाना की तरह दाने दिखाई देते हैं। उजले दाने पर पीलापन नजर आता है।

बचाव– तुरंत पुरानी बिछाली हटाकर सूखी और नई बिछाली बिछा दें। खाने में एक दिन आधा ग्राम प्रति किलो के हिसाब से तूतिया मिलाकर दें। पीने के पानी में टेरामाइसीन (पोल्ट्री फार्मूला) 2 ग्राम लिटर क हिसाब से मिला दें। यह दवा पॉच दिन तक दें। कमरे मे हवा के आने–जाने की अच्छी व्यवस्था करें ताकि बिछाली सूखी रहे।

6. एंट्राइटिस– यह रोग चूजे को कभी भी हो सकता है। इस रोग में चूजे को दस्त होता

है। पेट में पानी इकट्ठा होने से पेट कड़ा हो जाता है। फिर चूजे की मौत हो जाती है।

पोस्टमार्टम– पेट चीरने पर पानी निकलता है। दिल और उसकी झिल्ली के बीच हल्का पीला पानी रहता है। लीबर पर उजले–उजले धब्बे होते हैं। दिल और कलेजा झिल्ली से ढँका रहता है।

बचाव– जेन्टामाइसीन की सूई 0.2 से 0.4 ml प्रति चूजा दें। यह सूई गर्दन के चमड़े में दे। नेफ्टीन–200 एक किलो दाना मे प्रति 1 ग्राम के हिसाब से मिलाकर दें। ऐसा सात दिन तक करें। हर कमरें की बिछाली में 3 किलो चुना का पावडर मिला दें।

7. कॉक्सीडिओसिस– इसे पेचिश या खूनी दस्त भी कहते हैं यह बीमारी ज्यादातर 4 से 6 हफ्ता की उम्र में पाई जाती है। अगर बिछाली सूखी हो और दाने में कॉक्सीडिओस्टैट मिला रहे तो यह बीमारी होने के डर नहीं रहता है। ब्रायलर कम दाना खाता है। उसे खूनी दस्त होता है। वह सुस्त बैठा रहता है। उसके डैने का पंख ढीला रहता है। और आखिरकार वह मर जाता है।

पोस्टमार्टम– अंतड़ी फूली हुई और खून से भरी रहेगी।

बचाव– सल्मेट 10 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में मिलाकर दें। इसे दो दिन तक दें। तीसरे दिन से 4 मि0ल0 प्रति लिटर के हिसाब से तीन दिन तक दें। इस प्रकार पॉच दिन तक दवा चलेगी। गंदी बिछाली हटाकर नई बिछाली बिछा दें।

8. सी0 आर0 डी0– यह एक प्रकार की पुरानी खाँसी है। इस रोग में चूजे को साँस लेने में परेशानी होती है। नाक के छेद के चारों तरफ पीला पदार्थ सटा रहता है। आँख से पानी आता है। नाक चीपने से नेटा निकलता है। चूजा दाना कम खाता है और उसका वजन नहीं बढ़ता है। इस बीमारी से ब्रायलर अधिक संख्या में नहीं मरता है। लेकिन उसका वजन भी नहीं बढ़ता।

बचाव– टाइलोसीन/टियाम्युटिन को आधा ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से तीन दिन तक पीने के पानी में मिलाकर दें। खाने में नेफ्टीन–200 एक प्रति किलो दाने में मिलाकर दें। दवा मिला हुआ दाना 10 दिनों तक दें। कमरे में हवा के आने–जाने की अच्छी व्यवस्था करें।

9. अफ्लाटॉक्सीन– यह बीमारी फफूंदी लगे अनाज या खल्ली के जरिये आती है। इस बीमारी से चूजे मरने लगते हैं और जीवित चूजे का निर्धारित वजन नहीं आता है। चूजे थरथराकर चलते हैं और एक तरफ गिर जाते हैं। उनमें यह बीमारी तीन दिन की उम्र के बाद पाई जाती है।

बचाव– जो दाना खिला रहे थे, उसे बंद कर दें। ताजा और नया संतुलित आहार खाने को दें। टेरामाइसीन (पोल्ट्री फार्मूला) 2 ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से पॉच दिन तक पीने के पानी में मिलाकर दें। कमरे का तापमान 5 डिग्री और बढ़ा दें।

मुर्गी–अण्डे का व्यापार :

अण्डों की मांग प्रतिदिन बढ़ती जा रही है अतः उसके खपत की समस्या विकट नहीं है फिर भी उत्पादकों की कुछ अपनी समस्याएँ हैं जैसे अण्डे को कई दिनों तक ताजा रखना। इसके लिये बड़े व्यवसायी रेफ्रिजरेटर या कोल्डस्टोरेज का प्रबंध रखते हैं। छोटे व्यवसायी अण्डों को गरी के तेल में या चूना का पानी में डुबाकर फिर छॉव में सुखाकर काफी दिनों तक रख सकते हैं। अण्डे को बेचने से पहले उसका वर्गीकरण कर लेना चाहिये। गंदे टूटे–फूटे अण्डों को पहले ही छांट देना चाहिए। अण्डों को वजन और आकर के अनुसार ए0, बी0 एवं सी0 ग्रुप में बांट देना चाहिये। ताकि हर वर्ग के लिये आप को

समुचित पैसा मिल सके। अण्डे को एक सगज से दूसरी जगह भेजने के लिये बड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है। इसके लिये कूट का बक्सा या बॉस की डोलची का इस्तेमाल करनी चाहिये। टूटे–फूटे बहुत बड़े तथा छोटे अण्डे अलग–अलग टोकरी में भरना चाहिये। टोकरी में पहले कागज के टुकड़े या खर पतवार डाल दें फिर अण्डा को एक पर्त बिछाकर ऊपर से फिर खर पतवार दें इसी क्रम में अण्डा भरते जायें। बगल में भी कागज या खर पतवार दे देना चाहिये। अण्डों की कड़ी धूप तथा वर्षा से बचायें।

अण्डा या मुर्गा बेचने की आप स्वयं व्यवस्था कर सकते हैं। कुछ मुर्गीपालक उपभोग करने वाले के घर तक अण्डे पहुंचा देते हैं। मगर यह बड़े पैमाने पर संभव नहीं है। कुछ स्थानीय बाजार में बेचते हैं। कुछ लोग फेरीवाले को दे देते हैं जो शहर में उन्ही अण्डों से अधिक कमा लेता है। अतः बेहतर यही है कि आप अपने क्षेत्र के कई मुर्गी पालकों से मिलकर एक सहाकारी समिति बना लें और उसी के माध्यम से अण्डे और मुर्गी का क्रय–विक्रय करें।

कुछ अहम बातें

अब छोटी–मोटी सावधानियों के बारे में भी जान लें। इनका ध्यान न रखने से आपको तरह–तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ेगी। पैसों का नुकसान भी उठाना पड़ सकता है।

दाना– दाने को चूहों से बचाएँ। एक चूहा साल भर में 25 किलो दाना खा जाता है। फीडर में जरूरत से ज्यादा दाना नहीं भरें। फीडर की ऊँचाई ब्रायलर की पीठ के बराबर रखें। इससे दाना बर्बाद नहीं होगा। समय–समय पर चूजे के खाने के जगह बढ़ाते जाएँ 17 दिन तक कि बच्चे को प्रति बच्चा 1 इंच खाने की जगह दें 18 से 21 दिन के दौरान 2 इंच, 22 से 56 दिन के दौरान 3 इंच और उसके बाद कम से कम 4 इंच जगह दें। इससे हरेक ब्रायलर को खाने मे आसानी होगी और दाना भी बर्बाद नहीं होगा।

पानी– ब्रायलरपालन में साफ पानी का बहुत महत्व है। गंदे से तरह–तरह की बीमारियाँ होने लगती हैं। इससे आपको घाटा उठाना पड़ सकता है। इसलिए ब्रायलर को साफ पानी ही पीने के लिए दें। हर जीव के शरीर में 60 से 70 प्रतिशत पानी रहता है। उसी तरह ब्रायलर के शरीर में भी 65 प्रतिशत पानी रहता है। शरीर में पानी की मात्रा को बरकरार रखने के लिए ब्रायलर को भरपूर पानी देना बहुत जरूरी ह।

पानी का महत्व– 1. पानी शरीर की जरूरत है 2. यह शरीर के दूसरे अंगों तक पोषक तत्व पहुँचाता है। 3. खाना पचाता है 4. मल पदार्थ को बाहर निकालने में सहायता करता है। 5. ऑक्सीजन की आपूर्ति करता है। 6. शरीर के तापमान को नियंत्रित रखता है। आपको कुँआ, बोरिंग, नदी नहर और चापाकल से पानी मिल सकता है। ध्यान रखें कि जो पान आप खुद पीते हैं, वही पानी मुर्गी को भी दें। चूजे को पर्याप्त मात्रा में पानी दें चूजों के कम पानी पीने से भी आपको नुकसान हो सकता है। एक ब्रायलर छह सप्ताह में औसतन 6 लीटर पानी पीता है। अगर एक ब्रायलर रोजाना 10 प्रतिशत कम पानी पीता है तो वह 34 ग्राम दाना कम खाना खाएगा। इससे छह सप्ताह पूरा होने पर उसका वजन 180 ग्राम कम हो जाता है। मुर्गी को गंदा पानी कभी न दें। पानी कैसे गंदा होता है – 1. मूल स्त्रोत के दूषित होने से 2. टंकी में जमने एवं गदा रहने से 3. गंदा बर्तन में पानी देने से 4. ड्रिंकर को सही ऊँचाई पर नहीं रखने से। पानी अगर गंदा हो तो तुरंत साफ कर दें। साथ ही पानी की शुद्धता की जॉच हर तीन महिने पर नियमित रूप से करें, रोगों से बचाव, संतुलित आहार एवं संतुलित दाने के पोषक तत्वों को नियमित रूप से दें। इसमें कोई समझौता न करें।

टीका :– आपको अपने ब्रायलर को ज्यादातर छूत की दो बीमारियों रानीखेत और गम्बरो से बचाना होगा। इन बीमारियों से बचाव के लिए टीका (वैक्सीन) लगाना पड़ता है। इन दोनों बीमारियों का टीका हर दवाखाने में मिलता हैं रानीखेत का टीका एफ.– 1 या लसोटा वैक्सीन के नाम से जाना जाता है। गम्बरो बीमारी से बचाव के लिए आईबीडी टीका देना पड़ता है। यह टीका भी हर दवाखाने में मिलता है।

टीका देने के बाद एम्पुल (शीशी) और इस्तेमाल में आए सारे बर्त्तनों कको खौलते हुए पानी में डाल दें। यूँ ही बाहर न फेंके। इससे कीटाणु बाहर फैल जाते है जिसके कारण वही बीमारी फैलने का खतरा उत्पन्न हो जाता है।

©सर्वाधिकार सुरक्षित

कुक्कुट के लिए टीकाकरण कार्यक्रम

सप्ताह	बीमारी पर टीका	देने की विधि
(क) Vaccination programme for layers		
0–2 दिन	मेरेक्स, H V T स्ट्रेन	S/c (त्वचा में), हेचरी पर ही
3–7 दिन	रानीखेत, लासोटा या 'F-1' स्ट्रेन	Nasal drop/oral drop या पानी वाले पानी में
14–15 दिन	इन्फेक्सियस बुरसल (I.B.D.)गम्बोरो बीमारी (लाइव)	Oral drop or drinking water.
4–5 सप्ताह	फाउल पाक्स 'BM' स्ट्रेन	माँसपेशी में
5–8 सप्ताह	रानीखेत, 'RB' स्ट्रेन	माँसपेशी में
7–8 सप्ताह	गम्बोरो (लाइव), (Only in outbreak prone area)	Oral drop या पीने वाले पानी में
13–15 सप्ताह	इन्फेक्सियस ब्रोन्काइटिस	Oral drop या पीने वाले पानी
14–16 सप्ताह	फाउल पाक्स 'BM' स्ट्रेन	माँसपेशी में
15–18 सप्ताह	Egg drop syndrom '76' (मृत) एडजुवेन्टड	माँसपेशी में
16–18 सप्ताह	रानीखेत, 'RB' स्ट्रेन	माँसपेशी मे
(ख) Vaccination programme for broilers		
0–2 दिन	मेरेक्स, HVT स्ट्रेन	Subcutaneous (हेचरी पर ही)
5–7 दिन	रानीखेत, 'F-1' स्ट्रेन या लासोटा स्ट्रेन	Nasal drop, Oral drop या पीने वाले पानी में
14–15 दिन	गम्बोरो डिसिज (लाइव)	Oral drop, Drinking water
3–4 सप्ताह	रानीखेत 'F-1'या लासोटा स्ट्रेन (in out break prone area)	Drinking water, Oral/ Nasal drop.

मुर्गी व्यवसाय हेतु मानक चूजे (संख्या) की चयन तालिका –

सप्ताह	1 सप्ताह	2 सप्ताह	3 सप्ताह	4 सप्ताह	5 सप्ताह	6 सप्ताह	कुल
1	100	.....	.....	.....	.....	.....	100
2	100	100	.....	.....	.....	.....	200
3	100	100	100	.....	.....	.....	300
4	100	100	100	100	.....	.....	400
5	100	100	100	100	100	.....	500
6	100	100	100	100	100	100	600

आभार : मुख्य कार्यकारी अधिकारी जी0वी0टी0, नोएडा एवं निदेशक, भा0 कृ0 अनु0 प0, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन– IV, पटना

टाईम प्रेस, गोड्डा, मो0– 9931120405